

कुछ अनकही दास्तानें



मनोज सिंह

भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र, मुंबई

अनुसंधान रिएक्टर अप्सरा का नाम 'अप्सरा' ही क्यों रखा गया?

भारत एवं एशिया महाद्वीप का सर्व-प्रथम नाभिकीय अनुसंधान रिएक्टर 'अप्सरा' का नाम अप्सरा ही क्यों रखा गया इसके पीछे एक दिलचस्प कहानी छिपी हुई है। आप सभी जानते हैं कि डॉ. होमी जहांगीर भाभा ने नाभिकीय ऊर्जा संपन्न भारत का जो सपना देखा था उसकी शुरुआत 1 MW (थर्मल) स्विमिंग-पूल-टाइप रिएक्टर के 04 अगस्त, 1956 (शनिवार) को मुंबई के ट्रॉम्बे में 15:45 बजे क्रांतिक (क्रिटिकल) होने से आरंभ हुई।



चित्र -1 जवाहरलाल नेहरू अप्सरा स्विमिंग-पूल-टाइप अनुसंधान रिएक्टर की सुंदर नीली चमक निहारते हुए

दिनांक 20 जनवरी, 1957 को एटॉमिक एनर्जी एस्टैब्लिशमेंट ट्रॉम्बे (आईईटी) के उद्घाटन समारोह में रिएक्टर के नामकरण पर गंभीर मंथन किया गया। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने अपने अभिभाषण में कहा था कि रिएक्टर के नामकरण के लिए डॉ. के. एस. कृष्णन, तत्कालीन सदस्य, परमाणु ऊर्जा आयोग एवं निदेशक, राष्ट्रीय भौतिकी प्रयोगशाला (एनपीएल), नई दिल्ली ने कुछ नाम सुझाए हैं, जो संस्कृत से प्रेरित हैं। प्रस्तावित सभी नामों पर विचार के पश्चात संस्कृत भाषा के विद्वान एवं बॉम्बे (जो अब मुंबई) के तत्कालीन राज्यपाल (गवर्नर) श्री प्रकाश से सलाह-मश्विरा किया गया।



चित्र -2 स्विमिंग-पूल-टाइप अनुसंधान रिएक्टर 'अप्सरा' की सुंदर नीली चमक (चेरेंकोव विकिरण)

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू उद्घाटन समारोह स्थल से स्विमिंग-पूल-टाइप रिएक्टर का अवलोकन करने गए और रिएक्टर ट्रॉली टॉप से सतह की ओर देखते समय उन्हें पानी से आती हुई नीली रोशनी दिखाई दी, जिसे देखकर वे आश्चर्य-चकित और रोमांचित हो गए (चित्र-1)। इसको निहारने पर उन्हें यह दृश्य आसमानी परी

या जल-परी जैसी प्रतीत हुई, जिसे उन्होंने एकाएक 'अप्सरा' कह डाला। (चित्र-2)

इसका वर्णन करते हुए उन्होंने बताया कि अप्सरा का शाब्दिक अर्थ जलपरी या आसमानी परी है जो इस स्विमिंग-पुल-टाइप रिएक्टर के नाम के लिए सटीक है। तत्पश्चात, उन्होंने औपचारिक घोषणा करते हुए कहा कि “मैं इस स्विमिंग-पुल-टाइप रिएक्टर का नाम अप्सरा रखता हूँ।”

इस प्रकार, भारत ही नहीं बल्कि एशिया महाद्वीप के प्रथम अनुसंधान रिएक्टर का नामकरण 'अप्सरा' के रूप में पूर्व प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू द्वारा किया गया। इस अनुसंधान रिएक्टर की क्रांतिकता ने रेडियो आइसोटोप उत्पादन और वैज्ञानिक अनुसंधान के क्षेत्र में नई संभावनाओं के द्वारा खोल दिए। 'अप्सरा' केवल नाभिकीय अनुसंधान रिएक्टर ही नहीं बल्कि नाभिकीय क्षेत्र में भारत को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में पहला कदम था।

तो है न यह एक दिलचस्प, अनसुनी-अनकही कहानी। ऐसे ही कहानियों का रसास्वादन करने के लिए पढ़ते रहिए “परमाणु विज्ञान” पत्रिका के भावी अंक...



लेखक का परिचय



श्री मनोज सिंह

श्री मनोज सिंह, उत्कृष्ट वैज्ञानिक वर्तमान में, भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र, मुंबई के वैज्ञानिक सूचना संसाधन प्रभाग में प्रभागाध्यक्ष के पद पर कार्यरत हैं।

पढ़ें, परखें, सुझाव दें

प्रिय पाठकों,

परमाणु विज्ञान पत्रिका का सृजन अनेक प्रबुद्धजनों के अथक परिश्रम का परिणाम है। तथापि, इसमें परिष्कार की संभावना है। विज्ञान और जनसामान्य के बीच समागम सेतु के रूप में सृजित इस पत्रिका में जिस प्रकार का सुधार वांछित हो उसे ई-मेल के माध्यम से हमें सूचित करें। आपसे प्राप्त रचनात्मक एवं सकारात्मक सुझाव, प्रतिक्रिया और टिप्पणियां इस पत्रिका की विषय-वस्तु, स्वरूप, समसामयिकता, सूचनापरकता एवं रोचकता को नवीन आयाम प्रदान करने में संजीवनी का कार्य करेंगी।

आप अपने बहुमूल्य सुझाव parmanuvigyan@barc.gov.in पर साझा कर सकते हैं। आपसे प्राप्त चयनित सुझावों को आगामी अंकों में उचित स्थान दिया जाएगा।

मुख्य संपादक
परमाणु विज्ञान